A MULTI-THEMATIC ANALYSIS OF CONVENTIONS AND CONTEMPORANEITY IN THE HIMALAYAS AS DEPICTED IN SR HARNOT'S CATS TALK

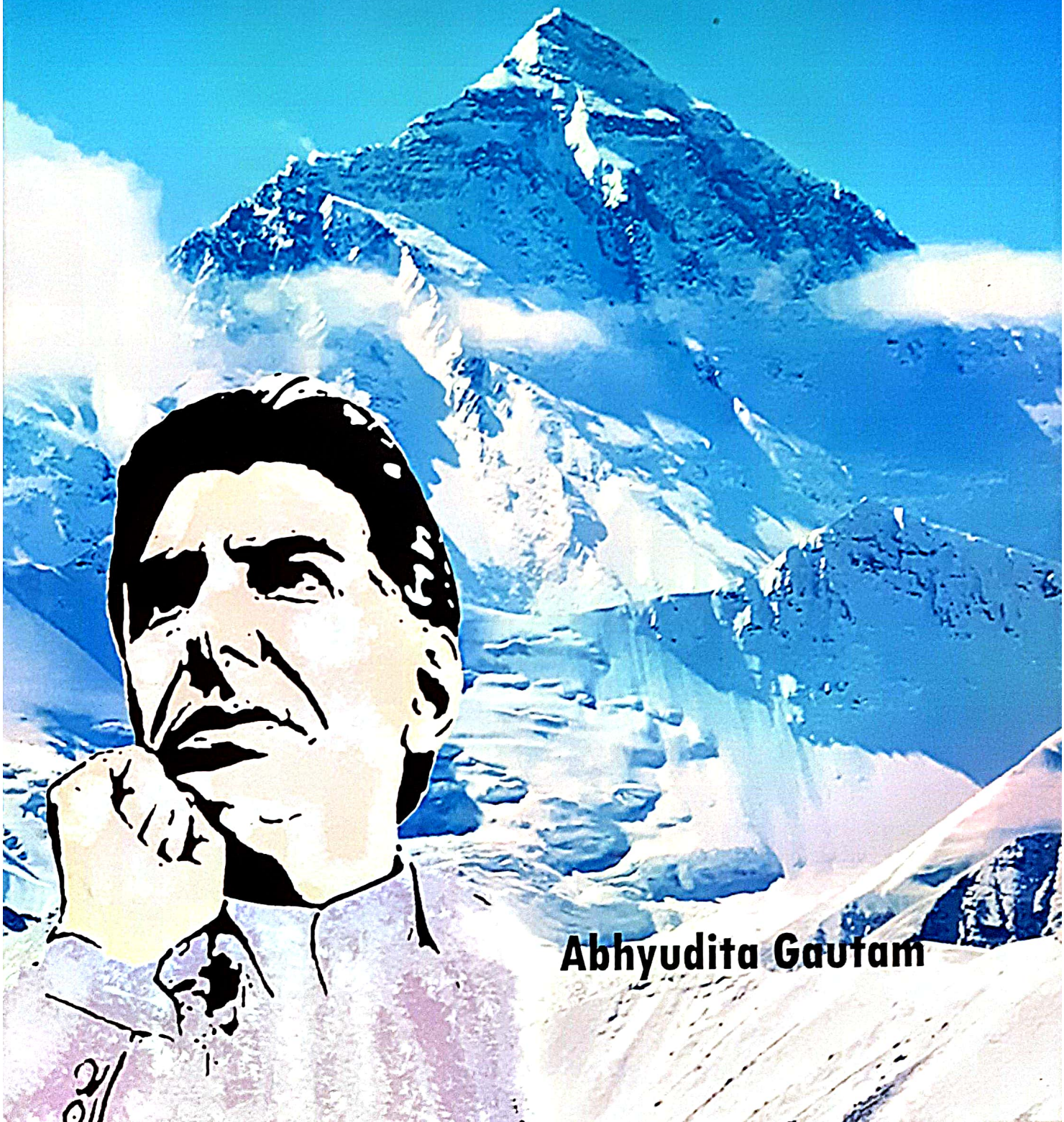

Abhyudita Gautam

Worldwide Circulation through Authorspress Global Network
First Published in 2023
by
Authorspress
Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)
Phone: (0) 9818049852
E-mail: authorspressgroup@gmail.com
Website: www.authorspressbooks.com

A Multi-Thematic Analysis of Conventions and Contemporaneity in the Himalayas as Depicted in SR Harnot's *Cats Talk*

ISBN 978-93-5529-575-0

Copyright © 2023 Abhyudita Gautam

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, or otherwise, without the express written consent of the author.

Printed in India at Thomson Press (India) Limited

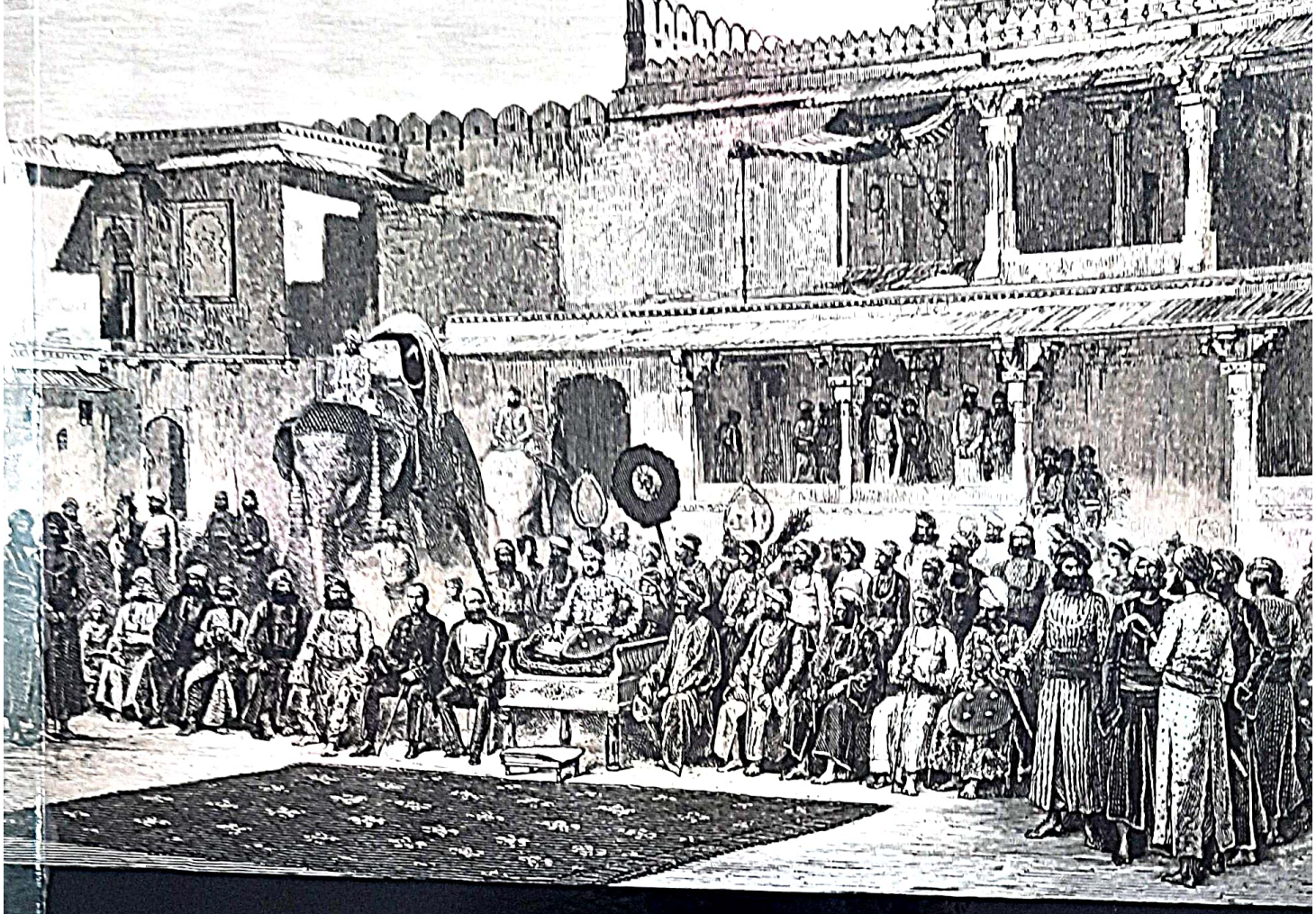

Mohana

A PLAY

D081

D081

(In English and Hindi)

By Abhyudita Gautam

MOHANA

A Play

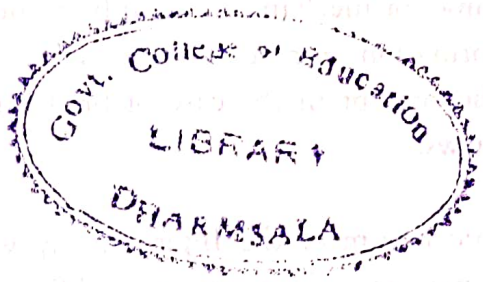

ABHYUDITA GAUTAM

PARTRIDGE

822
G11 M
D 084
060

Copyright © 2023 by Abhyudita Gautam.

ISBN:
Softcover 978-1-5437-0896-7
eBook 978-1-5437-0895-0

All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced by any means, graphic, electronic, or mechanical, including photocopying, recording, taping or by any information storage retrieval system without the written permission of the author except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

Because of the dynamic nature of the Internet, any web addresses or links contained in this book may have changed since publication and may no longer be valid. The views expressed in this work are solely those of the author and do not necessarily reflect the views of the publisher, and the publisher hereby disclaims any responsibility for them.

Translated in Hindi by: Kulbhushan Sharma

Print information available on the last page.

To order additional copies of this book, contact
Partridge India
000 800 919 0634 (Call Free)
+91 000 80091 90634 (Outside India)
orders.india@partridgepublishing.com

www.partridgepublishing.com/india

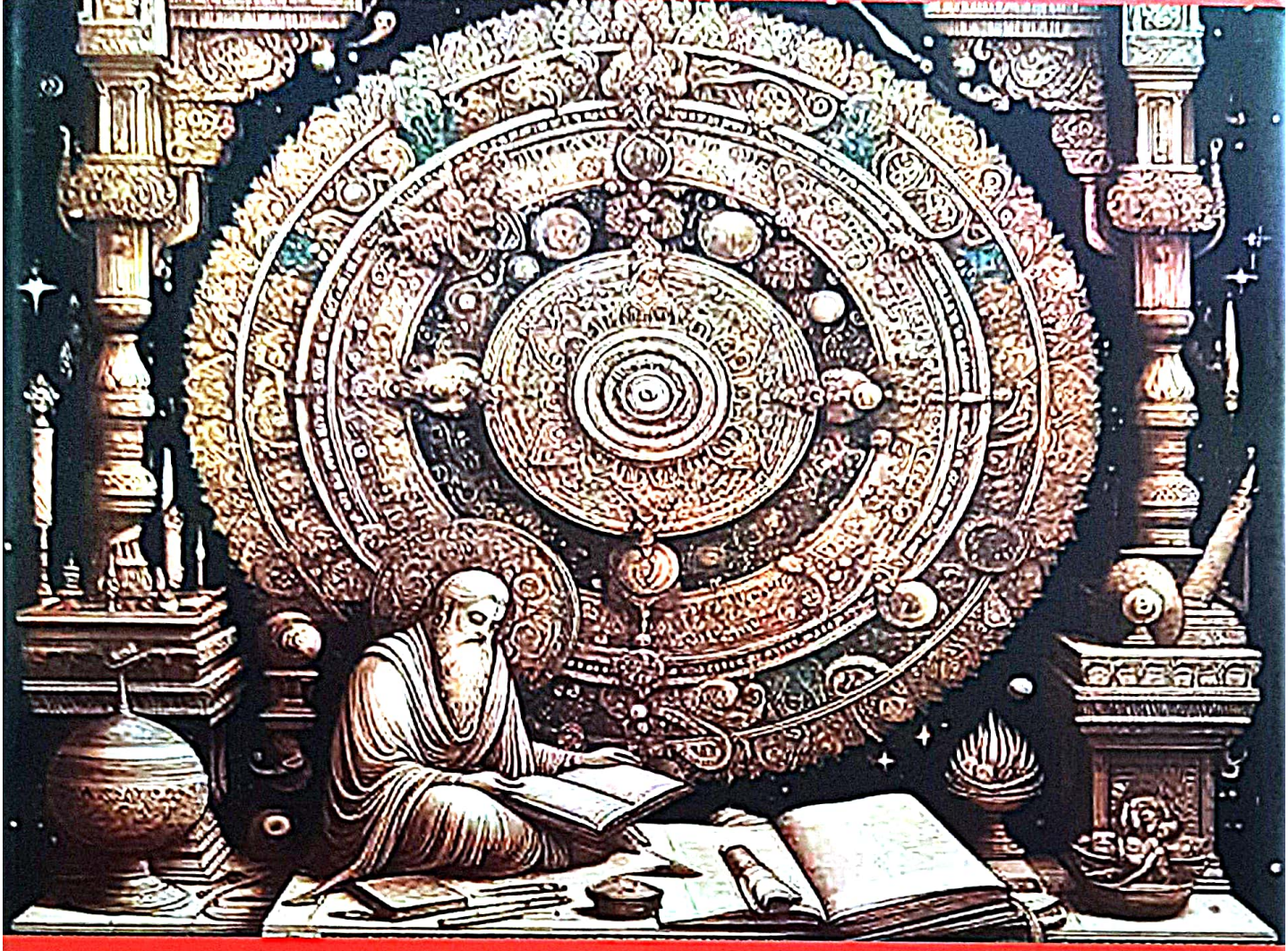

पौराणिक ज्ञान परम्परा

Knowledge Traditions in Puranas

प्रधान संपादक

डॉ. विवेक शर्मा

संपादक

डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय

अनुक्रम

शुभकामना सन्देश—डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी 5

शुभकामना सन्देश—प्रो. एस. पी. बंसल 7

पूरोवाक् 9

1. पौराणिक इतिहास में वर्णित विद्याएँ 15
—डा. वेद प्रकाश पाण्डेय

2. पौराणिक वाङ्मय का रचनाकाल एवं विषयवस्तु 26
—पंकज शर्मा

3. शिवमहापुराण एवं चन्द्रज्ञानागम में रुद्राक्ष-महिमा 36
—कपिल कुमार शर्मा

4. पुराणों का उदय एवं उन्नति 51
—डॉ. जी. एल. पाटीदार, डॉ. रिपन कुमार

5. शिवमहापुराण एवं चन्द्रज्ञानागम में भस्म-निरूपण 59
—कपिल कुमार शर्मा

6. पौराणिक ज्ञान परम्परा के आलोक में भारतीय मां की अभिनव शिक्षा 82
—डॉ. सुमन प्रसाद भट्ट

7. आश्रम व्यवस्था अग्निपुराण के सन्दर्भ में 95
—डॉ. प्रियंका

8. मार्कंडेय पुराण के आलोक में देवी स्तुति और महात्म्य का अवलोकन 105
—डॉ. प्रीति सिंह

9. श्रीमद्भागवतमहापुराण में ज्योतिषीय परम्परा 117
—डॉ. मुकेश शर्मा, पवन कुमार

अध्याय–1

आश्रम व्यवस्था अग्निपुराण के सन्दर्भ में

*डॉ प्रियंका**

शोधसार

मानव जीवन समाज के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। समाज के बिना मानव जीवन की कल्पना करना भी असम्भव है। इसी समाज का एक अभिन्न अंग आश्रम व्यवस्था है। आश्रम, शब्द 'श्रम' धातु से निर्मित हैं। श्रम का अर्थ है–परिश्रम करना अतः आश्रम व्यवस्था में मनुष्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रत रहता है। आश्रम व्यवस्था मनुष्य व समाज के बीच कड़ी का काम करती है। मनुष्य के जीवन को विभिन्न अवस्थाओं में आश्रम व्यवस्था ही उसके लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है। इस आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत ही व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा एवं पालनपोषण आदि की क्रियाएं आती है। किसी भी व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास आश्रम व्यवस्था पर ही निर्भर करता है। प्राचीन काल से ही आश्रम व्यवस्था को चार भागों में बांटा गया है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। ब्रह्मचर्य में व्यक्ति नियन्त्रित व कठिन जीवन जीता है, गृहस्थ में समाज व देश के प्रति जागरूक होता है। वानप्रस्थ में व्यक्ति संयम में रहता है तथा सन्यास में वह मोक्ष को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहता है। इन चार आश्रमों में रहते हुए व्यक्ति अपने

* सहायकाचार्य संस्कृत, राजकीय अध्यापक शिक्षामहाविद्यालय धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, Gmail:pk19priyanka@gmail-com

समकालीन साहित्य

विविध परिप्रेक्ष्य

सम्पादक
डॉ. सत्यनारायण स्नेही

सह-सम्पादक
डॉ. बविता ठाकुर

साहित्य में समकालीनता की अवधारणा

–राज भगति

साहित्य और समकालीनता दोनों के अपने-अपने विशद सन्दर्भ है। समकालीनता अंग्रेजी के कन्टेमपेरी (Contemporary) का हिन्दी पर्याय है, जिसका अर्थ है–समकाल या एक ही काल या अपने समय का या समवयस्क या सामाजिक आदि से है। वास्तव में समकालीनता एक सम्पूर्ण चेतना है, जो सामाजिक सन्दर्भों दबावों के तहत विशिष्ट स्वरूप व संरचना धारण करती है। वर्तमान समाज और संस्कृति तथा रचनात्मक दबाव जहाँ एकमेव हो जाये वहाँ काल की गति वर्तमानता के साथ समकालीन भी होती है। यह कालक्रम के साथ-साथ एक विचार भी है। हर एक समय एवं समाज की समस्याएँ एक-सी नहीं होती हैं या समय के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। अपने समय का यथार्थ-बोध तथा समाज के प्रति लोक पक्षधरता और सचेत मानवीय चेतना ही समकालीनता का बोधक होती है।

समकालीनता प्रत्यक्षतः नयेपन और समसामयिकता का बोध कराती है। समकालीन लेखन का सीधा सम्बन्ध वर्तमान लेखन के साथ जुड़ा हुआ है, जिसमें आज की सम-विषम परिस्थितियों का साक्षात्कार हो और बिना किसी पूर्वाग्रह के अपने समय की सच्चाई को पूरी तत्परता के साथ चित्रित किया गया हो। समकालीन होने का तात्पर्य यह भी है कि अपने समय के वैचारिक एवं रचनात्मक दबावों को झेलते हुए तमाम तनावों, उलझनों व विसंगतियों के बीच अपनी सृजनशीलता द्वारा अपने होने को प्रमाणित करना है।

लेखक : सहायक आचार्य हिन्दी राजकीय महाविद्यालय, संजौली